# तीव्र पुरुषार्थ - 9

➢➢ अर्जुन के 7 गुण

➳ _ ➳ आज्ञाकारी

→ गुरु द्रोणाचार्य के प्रति

→ कृषण के प्रति

→ भाइयों के प्रति

➳ _ ➳ PRACTISE

→ करत करत अभ्यास जड़मति होत सुजान

➳ _ ➳ CONCENTRATION

→ मछली की आँख की पुतली दिखाई देती है

➳ _ ➳ FRIENDSHIP WITH GOD

➳ _ ➳ द्रोपदी को प्राप्त करने वाला

→ बिंदु रूप में स्थित हो बिंदु को याद करना ( प्रतीक :- पानी में मछली के प्रतिबिम्ब को देखते हुए ऊपर आँख में तीर चलाया )

➳ _ ➳ शिव का तप करने वाला ( तपस्वी )

→ युद्ध से पहले घोर तपस्या

➳ _ ➳ भगवदगीता

→ भगवान से गीता सुनने वाला

➳ _ ➳ शक्तिशाली योधा

---

➢➢ जो ओटे सो अर्जुन / To Take **INITIATIVE** ( पहल करना ) / जो ज्ञान का अर्जन करे

➳ _ ➳ I = Image Yourself As A Leader Not As Employee

➳ _ ➳ N = Never Complain & Never Give Excuses

➳ _ ➳ I = INVOLVE EMOTIONALLY

→ दिमाग और दिल दोनों से सेवा करो.. जिगरी सेवा... हड्डी सेवा

➳ _ ➳ T = TAKE RESPONSIBILITY

➳ _ ➳ I = IGNORE परमत

→ किसी भी नए कार्य में दुनिया वाले पहले DISCOURAGE करते हैं

➳ _ ➳ A = ACTIVE PARTICIPATION

→ Do Not Be Audience / Spectator

➳ _ ➳ T = TRY PERSISTENTLY

→ लगातार कोशिश करते रहिये

➳ _ ➳ I = INNOVATIVE ( रचनात्मक ) & INVENTIVE ( नयापन )

➳ _ ➳ V = VOLUNTEER

➳ _ ➳ E = EXTRA MILE

→ जितना कहा गया, उससे ज्यादा ही कार्य कीजिये

---

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 9  Of Teevra Purusharth Book

---